पेशेवर गतिशीलता : जाति कितनी महत्त्वपूर्ण है (Occupational Mobility: How Much Does Caste Matter?)

राजेश्वरी देशपांडे और सुहास पलशिकर
(Rajeshwari Deshpande, Suhas Palshikar)

इस लेख में 2007 में पुणे में जाति और व्यवसाय के बीच के सम्बन्धों पर करवाए गए एक अध्ययन के निष्कर्षों को पेश किया गया है और शहर के विभिन्न जातिगत समूहों की चार पीढ़ियों में अन्तर-पीढ़ीगत पेशेवर गतिशीलता के पैटर्नों की पड़ताल की गई है। इसमें देखा गया है कि यद्यपि सामान्य तौर पर पेशेवर गतिशीलता के साथ जाति का कोई बहुत पक्का सम्बन्ध नहीं है, लेकिन ऊपर की तरफ होने वाली गतिशीलता (upward mobility) के लिए यह निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण है, हालाँकि गतिशीलता का यह विस्तार भिन्न-भिन्न जातियों के बीच अलग-अलग है। मराठा-कुनबी और दलितों को ऊपर की तरफ होने वाली इस गतिशीलता का सबसे ज्यादा फायदा हुआ है, हालाँकि उनकी यात्रा के ढंग में एक फर्क है। अन्य पिछड़े वर्ग इन दोनों से पीछे हैं और उनमें से भी कुछ जातियाँ गतिशीलता के मामले में काफी गतिहीन दिखती हैं।

यह अध्ययन पुणे विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराई गई धनराशि से किया गया है। सहयोग के लिए हम केन्द्र को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अध्ययन को सूत्रबद्ध करने में हमारी मदद करने के लिए हम नितिन बिरमल और राजेन्द्र वोरा को भी धन्यवाद देते हैं। नितिन बिरमल और विवेक घोटाले ने फ़ील्डवर्क के समन्वय में हमारी मदद की। हम पुणे विश्वविद्यालय के राजनीति और लोक प्रशासन विभाग के विद्यार्थियों को फ़ील्ड अनुसन्धान में उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं। सोनाली नागमोटे ने डेटा प्रविष्टी में हमारी सहायता की। घनश्याम शाह ने हमें यह कार्य करने के लिए प्रेरित किया और बाद में, योगेन्द्र यादव के साथ मिलकर इसकी समीक्षा भी की। हम उन दोनों के प्रति आभारी हैं। जयंत लेले और राजेन्द्र वोरा ने इस अध्ययन के शुरुआती निष्कर्षों पर अपनी टिप्पणी दी।

राजेश्वरी देशपांडे (rajeshwari@unipune.ernet.in) और सुहास पलशिकर (suhas@unipune.ernet.in) पुणे विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान पढ़ाते हैं।

समकालीन भारत में सामाजिक जीवन, उभरती शक्ति संरचनाओं और पदानुक्रम को समझने के लिए एक व्याख्या कारक के रूप में ऐसी कहानियों की भरमार है जिनमें यह कहा जाता है कि एक संस्था के रूप में जाति आज भी मौजूद है तो साथ ही ऐसी भविष्यवाणियाँ भी हैं जिनमें उसकी घटती हुई भूमिका की बात होती है। इसी विरोधाभासी स्थिति को श्रीनिवास (Srinivas, 1996 और 2003) और शाह (Shah, 2007) ने अपने काम में संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया है। सच्चाई कहीं-न-कहीं इन दो चरम स्थितियों के बीच में है जिसे शोधकर्ता को समझना चाहिए। समकालीन भारत में जाति के बारे में कोई भी समझ बनाने से पहले कम-से-कम इन तीन पहलुओं की पड़ताल की जानी चाहिए : 1980 के दशक के अन्त में जाति और राजनीति के बीच की परस्पर क्रिया के बदलते स्वरूप; मण्डल कमीशन के बाद के दौर में पहचान में बदलाव व जाति संगठनों का सामने आना; और जाति-पेशे के सम्बन्धों का मुद्दा। मतदान और चुनावी अध्ययनों से जुड़ी सामग्री के भण्डार इस हकीकत की तरफ इशारा करते हैं कि जाति और राजनीति के बीच का रिश्ता चुनावी राजनीति से कहीं ज्यादा गहरा उतर चुका है और साथ ही उसे नया आकार देने में बहुत सारे सामाजिक-आर्थिक कारक भूमिका निभा रहे हैं। इसलिए एक राजनीतिक वैज्ञानिक के लिए सामाजिक विन्यास के क्षेत्र में ज्यादा पेचीदा रूपों को देखना अतिआवश्यक हो गया है। यहाँ हम जाति और पेशे के बीच के सम्बन्धों के एक अन्वेषण पर आधारित अध्ययन के नतीजों को आपके सामने रख रहे हैं। हाल ही के वर्षों में कुछ विद्वानों ने इस सम्बन्ध के बारे में अनुमान लगाने के लिए बड़े पैमाने पर इकट्ठे किए गए आँकड़ों का सहारा लिया है। जाति और पेशे के बीच के सम्बन्धों पर कुछ प्रकाश डालने के साथ ही यह अध्ययन प्राक्कल्पनात्मक सूत्रीकरणों (hypothetical formulations) के आधार पर आगे की पड़ताल को आकार देने में भी मदद करते हैं। इनको मुख्यतौर पर शेठ (Sheth, 1999 और 1999ए) और शाह (2002) द्वारा प्रस्तुत किया गया जिन्होंने राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (National Election Studies – NES) के आँकड़ों का इस्तेमाल किया।

जहाँ शेठ और शाह जाति और पेशे के बीच के समकालीन सम्बन्धों को समझने की कोशिश करते हैं, वहीं संजय कुमार एवं अन्य (Sanjay Kumar et al) दो पीढ़ियों में पेशेवर गतिशीलता को मापने का नक्शा तैयार करने की कोशिश करते हैं। हमारा अध्ययन भी जाति समूहों में विभिन्न पीढ़ियों के बीच होने वाले पेशेवर बदलावों और उनकी गतिशीलता के पैटर्न की पड़ताल करने की ही कोशिश करता है। कुमार एवं अन्य (2002 और 2002ए) को शायद भारतीय समाज के समाजशास्त्रीय विश्लेषण में समकालीन गतिशीलता अध्ययनों के अग्रदूतों के रूप में उचित ही वर्णित किया गया है। राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन के आँकड़ों का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने पेशेवर गतिशीलता और जाति के साथ उसके सम्बन्ध के मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश की है। इस अध्ययन में हम कुमार एवं अन्य के रास्ते पर चलते हुए अपनी जाँच को एक कदम

और आगे ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। इस तरह, इसे उस बढ़ते हुए साहित्य के एक हिस्से के रूप में देखा जा सकता है जो वर्ग-जाति की बहस को मजबूती से प्रयोगसिद्ध सन्दर्भ में रखते हुए कुछ ऐसे नतीजे निकालना चाहता है जिनकी कोई बड़ी प्रासंगिकता हो सके। इसका उद्देश्य एक शहरी माहौल में रहने वाले विभिन्न जाति समूहों में होने वाली पेशेवर गतिशीलता के विस्तार के बारे में पड़ताल और तुलना करना है। क्या एक आधुनिक शहरी अवस्थिति परम्परागत रूप से वंचित जाति समूहों की पुराने नुकसान की भरपाई करने और अपेक्षाकृत नए तथा “उच्च” पेशों तक पहुँच पाने में मदद करती है? क्या पीढ़ियों के बीच में कोई एक सीधा पैटर्न (linear pattern) है? जहाँ तक दो समकालीन पीढ़ियों का सवाल है, क्या उनमें यह अन्तर-पीढ़ीगत रुझान बढ़ रहा है? क्या हम कह सकते हैं कि (ऊपर की तरफ) गतिशीलता विभिन्न जाति समूहों में एक जैसी है; यानी, क्या विभिन्न जाति समूहों में आगे बढ़ने की दर एक-सी है? ये कुछ मुद्दे हैं जिन्हें हम इस लेख में उठाएँगे।

1. अध्ययन

यह अध्ययन पुणे में किया गया, परम्परागत रूप से एक ऐसा शहर जहाँ उच्च जातियों का दबदबा रहा है। सदी के बदलाव पर पुणे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजरा, जब वह उच्च शिक्षण संस्थाओं का केन्द्र बन गया जो देश के कोने-कोने से छात्रों को अपनी तरफ खींच रहा था। इसी दौरान इस शहर में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) उद्योग और उससे जुड़े पेशेवर और सेवा क्षेत्रों में कुशल पेशेवर लोगों की संख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई। चूँकि नई सदी में यह शहर एक महानगर बनने के लिए पूरी तरह तैयार है, ऐसे में एक सवाल उठ खड़ा हुआ है : क्या यह शहर अपने परम्परागत पदानुक्रमों तथा जाति, पेशे और दर्जे के बीच की कड़ियों को नकारने के मौके प्रदान करने में कामयाब हुआ है? क्या आज पुणे में एक आम आदमी एक ऐसे पेशेवर माहौल में रहता है जिसे एक ऐसी जगह के रूप में देखा जा सके जहाँ पर उसे उसके पूर्वजों की तुलना में आगे बढ़ने के ज्यादा मौके मिल पाते हों? क्या ऊपर उठ पाने के मौके यहाँ सभी जाति समूहों के लिए एक जैसे खुले हैं या फिर विभिन्न जाति समूहों की गतिशीलता के प्रक्षेपमार्ग बिलकुल अलग-अलग हैं?

नमूना चयन (Sampling) : एक तरह से हम यहाँ पुणे शहर में किए गए अपने अध्ययन को ही आगे बढ़ा रहे हैं (देशपांडे 2001, 2004)। हालाँकि, उस अध्ययन में पीढ़ियों के बीच की गतिशीलता को शामिल नहीं किया गया था। यह शोध पत्र केवल इसी सवाल को लेकर चलता है कि क्या विभिन्न पेशेवर स्थानों पर रहने वाले परिवार सामाजिक हैसियत के तौर पर ऊपर उठ रहे हैं और अपने पेशों से ज्यादा कमाने की स्थिति में पहुँच रहे हैं। इस उद्देश्य के लिए हमने

पुणे नगर निगम (Pune Municipal Corporation – PMC) क्षेत्र के कुल 146 वार्डों में से 14 वार्डों को नमूने के तौर पर लिया। हमने शहर के 14 मण्डलों में से एक-एक वार्ड को यादृच्छिक नमूना चयन विधि (random sampling method) के आधार पर चुना। नमूने के तौर पर लिए गए ये वार्ड पुणे शहर के बदलते हुए सामाजिक और स्थानिक पहलुओं को पर्याप्त रूप से सामने लाते हैं। इनमें पुराने शहर, 1960 के दशक के बाद हुआ उनका विस्तार और 1997 में शहर में शामिल किए गए उसके साथ लगते हुए गाँवों को शामिल किया गया। नमूना चयन का दूसरा दौर जवाब देने वालों को चुनने का था। हरेक वार्ड की मतदाता सूची में से एक प्रतिशत लोगों को यादृच्छिक नमूना चयन के जरिए जवाब देने के लिए चुना गया। फ़ील्डवर्क मार्च से जून 2007 के बीच संचालित किया गया। यह अध्ययन उत्तरदाताओं के आवास पर आयोजित साक्षात्कार के माध्यम से 1,223 पूर्ण अनुसूचियों पर आधारित है। (कुल 1746 नमूनों का लक्ष्य रखा गया था; जिसे लगभग 70 प्रतिशत तक पूरा कर लिया गया।) नमूनों के इस फ्रेम के आधार पर हम अस्थाई (temporary) और गतिशील वर्ग (mobile segments) के लोगों की, खासतौर पर वे जो नए उभर रहे सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम कर रहे हैं, बात नहीं कर सकते थे। अध्ययन में शामिल नमूना आबादी की कुछ बुनियादी विशेषताओं को तालिका 1 में दिखाया गया है।

तालिका 1 : नमूना प्रोफ़ाइल (Sample Profile)

जनसांख्यिकीय कारक	नमूने में हिस्सेदारी
पुरुष	52
महिलाएँ	48
40 साल से नीचे	58
निरक्षर	11
स्नातकोत्तर	08
हिन्दू	77
मुस्लिम	12
बौद्ध	07
मराठी भाषी	75
हिन्दी भाषी	15
ऊँची जाति के	17
मराठा-कुनबी	29
अन्य पिछड़ा वर्ग	20
दलित	21

निवास – जन्म से	47
दस साल से कम	10
झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले	25
चॉल (chawl) में रहने वाले	32
फ़्लैट में रहने वाले	30

तालिका 2 : पुणे में अन्तर-पीढ़ीगत पेशेवर गतिशीलता के पैटर्न : 2007
(चार पीढ़ियों के दौरान – दादा-दादी, माता-पिता, उत्तरदाता और उनके बेटे / बेटियाँ)

	%	**संख्या**
ऊपर की तरफ गतिशीलता	45	486
कोई गतिशीलता नहीं	22	242
नीचे की तरफ गतिशीलता	17	187
विषम पैटर्न	15	163
कुल		1,078

गतिशीलता सूचकांक की व्याख्या के लिए, संलग्न नोट देखें।

2001 की जनगणना के मुताबिक, पुणे की आबादी 23,76,900 थी। पुणे नगर निगम के अनुमानों के मुताबिक 2006 में शहर की आबादी तीस लाख के करीब थी। इनमें से करीब 43 प्रतिशत झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले थे। 2001 में शहर की कुल आबादी का लगभग 60 प्रतिशत का हिस्सा ऐसा था जिसमें सम्भावित कमाने वालों की उम्र 15 से 60 के बीच थी और कमाने वाले दूसरे 6 प्रतिशत लोग 61 साल और उससे ज्यादा उम्र के थे। 2001 की जनगणना में पुरुष-महिला अनुपात 1000 : 960 था। शहर की आबादी में प्रवासियों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 1991 की जनगणना के मुताबिक, शहर की कुल आबादी का लगभग 43 प्रतिशत हिस्सा प्रवासियों का था और उनमें से लगभग आधे ऐसे थे जो एक दशक से ज्यादा समय पहले इस शहर में आए थे।

शहर की जनसांख्यिकी पर विकास के इस प्रभाव को लेकर काफी उत्सुकता और अटकलें थीं जिसने इसकी संरचना, इसके आसपास के क्षेत्र और इसके परिवेश को बदलकर रख दिया है। हालाँकि, यह अध्ययन आसपास के इलाकों में हुए विकास की पड़ताल नहीं करता। इसके बजाय, यह खुद को शहर में हुए पेशेवर बदलावों के बदलते पैटर्न तक ही सीमित रखता है। किसी भी नगरपालिका या नगर निगम की प्रशासनिक श्रेणी को शहरी स्थान के रूप में जिस तरह नए

सिरे से परिभाषित किया जा रहा है उसके बारे में हम अवगत हैं। शहरी समूह तेजी से उभर रहे हैं और महत्त्वपूर्ण सामाजिक स्थान हासिल करते जा रहे हैं, शहर कैसा होना चाहिए इस विचार की टाउनशिप की, आत्मनिर्भर और विशाल रिहाइशी क्षेत्रों के सन्दर्भ में फिर से कल्पना की गई। इसके परिणामस्वरूप, आवासीय पैटर्नों के सम्बन्ध में सामाजिक क्षेत्रों का अधिक केन्द्रीभूत समूहीकरण (concentrated clustering) हो रहा है। साथ ही "शहर" की पहचान को अकसर "महानगरों के पड़ोस" में होने जैसे ढुलमुल विचार से जोड़कर देखा जाता है। यह विकास भारत के कई शहरों और महानगरों में देखा गया है। उभरते हुए महानगर अपने आसपास की सामाजिक और भौतिक जगह को निगलते जा रहे हैं, और कई क्षेत्रों के सामाजिक और भौतिक दोनों मानचित्रों को बदल रहे हैं। हालाँकि यह घटनाक्रम अपने-आप में बहुत दिलचस्प हैं, लेकिन अपने अध्ययन में हमने इन्हें पृष्ठभूमि में ही रखने का फैसला लिया है।

2. पद्धतिमूलक मुद्दे (Methodological Issues)

हम यहाँ पद्धति से जुड़े कुछ मुद्दों की चर्चा करते हैं।

पेशों का वर्गीकरण : पेशे पर आधारित वर्ग की किसी भी चर्चा में वर्गीकरण का मुद्दा सबसे महत्त्वपूर्ण, पेचीदा और विवादों से भरा है (समाजशास्त्र में चल रही बहसों की समीक्षा के लिए देखें क्रॉम्पटन [Crompton] 1993: 49-78)। संजय कुमार एवं अन्य (2002 एवं 2002ए; अन्थोनी हीथ [Anthony Heath] 1981 के शोध-कार्य का अनुसरण करते हुए) पेशेगत दर्जे पर आधारित एक वर्ग योजना प्रस्तुत करते हैं जो चार व्यापक समूहों को अलग करता है : वेतन लेने वाले, व्यापार में लगे लोग, श्रमिक (कुशल और अकुशल) और किसान। चार तह का यह पेशेवर समूहीकरण उन्हें सभी आठ अलग-अलग पेशेवर समूहों का उनकी अन्तर-पीढ़ीगत गतिशीलता के विश्लेषण के लिए आधार देता है (कुमार एवं अन्य, 2002)। ये समूह अपनी प्रकृति में कठोरता से पदानुक्रमित नहीं हैं और एक ही परिवार के लोग एक ही धरातल के अलग-अलग पेशों में जाते नजर आते हैं। कुमार एवं अन्य इन आठ वर्गों के बीच की सीमाओं में एक विशेष तरह की स्वच्छन्दता को भी स्वीकार करते हैं (कुमार एवं अन्य 2002: 2984)। घनश्याम शाह (Ghanshyam Shah 2002) ने ग्रामीण और शहरी व्यवसायों में एक बुनियादी अन्तर को स्पष्ट किया। ग्रामीण क्षेत्रों के कमाने वालों (rural earners) को जमीन की मालिकी के स्वरूपों के आधार पर वर्गीकृत किया जा रहा है। इस तरह, शाह के बनाए खाके में ग्रामीण क्षेत्रों के कमाने वालों के मुख्य समूह किसानों के ही हैं, जिनके पास जमीन अलग-अलग मात्रा में है; छोटे किसान, और खेत मजदूर; जबकि शहरी क्षेत्र में शाह ने पेशेवर समूहों को ऊँचे दर्जे के

प्रोफ़ेशनलों / पेशेवर लोगों, सफेदपोश कर्मचारियों, बड़े और छोटे व्यापारियों और कारीगरों एवं श्रमिकों में बाँटा है (शाह 2002: 14-15)।

हमने अपनी शुरुआत व्यावसायिक श्रेणियों को उनके सोपानिक स्थान के सन्दर्भ में स्थापित करने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ की है। हमारा अध्ययन इसी दृष्टिकोण को लेकर चलता है कि सामाजिक संरचनाएँ असमान विभाजनों पर ही टिकी हुई हैं; यह कि भौतिक असमानताओं की जड़ें जीवनशैली की असमानताओं के साथ-साथ अवसरों और जीवन के मौकों की असमानताओं में गहरी धँसी हुई हैं; और यह कि आधुनिक औद्योगिक सामाजिक सन्दर्भों में, रुतबे और पदानुक्रम के विचार व्यवसायों के माध्यम से कपटता से काम करते हैं और इसीलिए पेशेवर श्रेणी वर्ग सम्बन्धों को समझने में सबसे महत्त्वपूर्ण विभेदक कारकों में से एक है। इसके अलावा, हम बेहतर या बदतर वर्ग स्थितियों के लिए गतिशीलता के अर्थ में समझी जाने वाली पेशेवर गतिशीलता के पैटर्न की भी जाँच करना चाहते थे। इन सरोकारों को देखते हुए ही हमने उन पेशेवर श्रेणियों को चुना जो विभिन्न पेशों से जुड़े रुतबे के विचारों, धन पैदा करने के अवसरों और ज्ञान / तकनीकी कौशल या महज शारीरिक श्रम की आवश्यकता का उल्लेख करती हैं। मोटेतौर पर हमने व्यवसायों को ऊपरी या ऊँचे, ऊपरी मध्यम, मध्यम, निम्न मध्यम, खराब या निम्न और बहुत खराब या बहुत निम्न के रूप में वर्गीकृत किया (अन्त में, परिशिष्ट I)।

गतिशीलता को मापना : दूसरा प्रयोग जो हमने किया वह प्रत्येक उत्तरदाता की अन्तर-पीढ़ीगत गतिशीलता को मापने का था। हर उत्तरदाता की चार पीढ़ियों की जानकारी को देखने पर, और पुरुष एवं महिला सदस्यों दोनों के ही पेशेवर इतिहास को ध्यान में रखते हुए हमने एक गतिशीलता सूचकांक (Mobility Index – MI) डिज़ाइन किया जो हर परिवार की चार पीढ़ियों में ऊपर या नीचे की तरफ हुई गतिशीलता का पता लगाएगा। इस कवायद ने हमें हर परिवार को ऊपर की तरफ हुई गतिशीलता, नीचे की तरफ गतिशीलता, कोई गतिशीलता नहीं, विषम गतिशीलता और अन्य (जहाँ पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाई) के पाँच बिन्दुओं वाले पैमाने पर रख पाने में मदद की (अन्त में, परिशिष्ट II)।

3. गतिशीलता का विस्तार (Extent of Mobility)

गतिशीलता सूचकांक के आधार पर देखें तो पिछली चार पीढ़ियों के दौरान 45 प्रतिशत परिवार पेशेवर पदानुक्रम में ऊपर उठे हैं, जबकि 17 प्रतिशत नीचे की तरफ लुढ़के हैं। यद्यपि ऊपर जाने और नीचे गिरने वाली गतिशीलता का अनुपात 2.5 : 1 के आसपास है, लेकिन हमें यहाँ पर ऊपर जाने वाली शुद्ध गतिशीलता (ऊपर की तरफ गतिशीलता – नीचे जाने वाली

गतिशीलता = 28 प्रतिशत) की एक बढ़िया तस्वीर देखने को मिलती है, जो उससे ज्यादा है जहाँ पर "कोई गतिशीलता नहीं" है और मिली-जुली या "विषम गतिशीलता" के पैटर्न (क्रमश: 22 और 15 प्रतिशत) से भी ज्यादा हैं। कुमार एवं अन्य (2002ए: 4093) द्वारा अपने अध्ययन में प्रतिवेदित किया गया है कि भारतीय सन्दर्भ में गतिशीलता के समग्र रुझानों के साथ तुलना करने पर यह प्रवृत्ति उल्लेखनीय है। उनके निष्कर्षों के अनुसार, अखिल भारतीय स्तर पर 70 प्रतिशत परिवार दो पीढ़ियों में गतिशीलता सूचकांक पर स्थिर रहे। ऊपर उठने वाले लोगों की दर भी बहुत प्रभावशाली न होकर 22 प्रतिशत के आसपास रही। इस तरह आगे बढ़ने वालों की शुद्ध दर 15 प्रतिशत पर रह जाती है। इसे समझा जा सकता है क्योंकि यह नमूने ग्रामीण और शहरी दोनों इलाकों के हैं। हालाँकि, एक ही समंक समूह के लिए और केवल शहरी नमूने पर विचार करते हुए, ऊपर की तरफ गतिशीलता की व्यापकता, 24 प्रतिशत पर होकर, अभी भी बहुत अधिक नहीं है। आगे बढ़ने वालों की शुद्ध गतिशीलता (उन 11 प्रतिशत लोगों को छोड़कर जिन्हें नीचे की ओर गिरते दर्ज किया गया) महज 13 प्रतिशत है।[1] इस तुलना से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि पुणे के रहवासियों की पिछली चार पीढ़ियों में ऊपर की तरफ उठने वाली गतिशीलता ज्यादा रही। इस बात को भी ध्यान में रखने की जरूरत है कि कुमार एवं अन्य ने सिर्फ दो पीढ़ियों की गतिशीलता का ही अध्ययन किया है। हालाँकि, वे यह भी बताते हैं कि 1971 में महज 3 प्रतिशत ऊपर की तरफ जाने वाली शुद्ध गतिशीलता ही देखी जा सकती थी (कुमार एवं अन्य : वही)। 1971-1996-2007 की समयावधि के दौरान और क्रमश: दो और चार पीढ़ियों में आगे बढ़ने की इस ज्यादा गतिशीलता के रुझानों का मतलब यह नहीं है कि सामाजिक स्थानों का काफी लोकतंत्रीकरण हो रहा है। यह दिखाता है कि काम के बदलते स्वभाव और प्रौद्योगिकी से जुड़े बदलावों के कारण मिलने वाले मौकों की संरचनाओं में ज्यादा खुलापन रहा है (किंग्स्टन [Kingston] 2000: 70)।

तालिका 3 : अन्तर-पीढ़ीगत पेशेवर गतिशीलता के पैटर्न (2007)

(दादा और पिता, पिता और उत्तरदाता एवं उत्तरदाता और बेटा / बेटी)

	दादा और पिता	**पिता और उत्तरदाता**	**उत्तरदाता और बेटा / बेटी**
ऊपर की तरफ गतिशीलता	23	36	42
नीचे की तरफ गतिशीलता	16	23	20
कोई गतिशीलता नहीं	61	41	38
संख्या	362	711	205

तालिका 4 : शिक्षा (उत्तरदाता) और गतिशीलता (4 पीढ़ियाँ)

	निरक्षर	प्राथमिक शिक्षा तक	माध्यमिक विद्यालय	महाविद्यालय एवं उससे ऊपर
ऊपर की तरफ गतिशीलता	43	44	45	46
नीचे की तरफ गतिशीलता	14	19	17	18
कोई गतिशीलता नहीं	16	19	26	22
विषम गतिशीलता	27	19	12	13

संख्या 1,078

तालिका 5 : जेंडर आधार पर पेशेवर गतिशीलता

	पुरुष	महिलाएँ	औसत
ऊपर की तरफ गतिशीलता	45	45	45
नीचे की तरफ गतिशीलता	18	17	17
कोई गतिशीलता नहीं	25	20	22
विषम गतिशीलता	13	18	15

संख्या 1,078

ऊपर की तरफ की गतिशीलता में 46 प्रतिशत महिलाएँ और 54 प्रतिशत पुरुष शामिल हैं – नमूने में उनके हिस्से के अनुपात में सिर्फ 2 प्रतिशत का फर्क है। इसी तरह, नमूने में ठीक उनके हिस्से के अनुपात में, ऊपर की ओर गतिशील लोगों में 70 प्रतिशत से ज्यादा या तो हाई स्कूल या महाविद्यालय तक शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। जो लोग दस साल से कम समय से शहर में रह रहे हैं, वे गतिशीलता वाले लोगों में नमूने में उनके हिस्से (8 प्रतिशत) से थोड़ा ज्यादा (10 प्रतिशत) हैं।

दो पीढ़ियों की अलग-अलग तस्वीर यह भी दिखाती है कि पहली पीढ़ियों (दादा और पिता और उत्तरदाता [आर] और पिता) के मुकाबले ऊपर की तरफ होने वाली गतिशीलता चौथी पीढ़ी में ही

तेजी पकड़ती है। उत्तरदाता की अगली पीढ़ी और पहले बच्चे में अन्तर-पीढ़ीगत गतिशीलता ऊपर की ओर अधिक है। यह उन दोनों के अनुपात को कम करती है जो “कोई गतिशीलता नहीं” बताते हैं और जो नीचे की तरफ जा रहे हैं (तालिका 4)। दादा और पिता के पहले समूह में, ऐसे लोगों का प्रतिशत बहुत ज्यादा है जो अपने पिता के पेशे वाले स्तर पर ही फँसे हुए हैं। यह प्रतिशत अगली दो पीढ़ियों में तेजी से घटता है और ऊपर तथा नीचे दोनों ही दिशाओं में ज्यादा गति होती है। हमें शिक्षा, जेंडर या निवास और गतिशीलता के बीच सांख्यिकी रूप से कोई महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध देखने को नहीं मिलता है। इन कारकों में गतिशीलता चर के बहुचक रैखिक प्रतिगमन (Multivariate linear regressions) गतिशीलता के साथ इनमें से किसी भी कारक का कोई महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं दिखाते हैं (रैखिक प्रतिगमन तालिका 16, तालिका 17 और 18 में दिखाए गए हैं।)

तालिका 6 : पुणे शहर में निवास के वर्षों के अनुसार पेशेवर गतिशीलता

	10 वर्ष से कम	**10 वर्ष से ज्यादा**
ऊपर की तरफ गतिशीलता	45	45
नीचे की तरफ गतिशीलता	23	17
कोई गतिशीलता नहीं	23	22
विषम गतिशीलता	08	16

संख्या = 1,078

तालिका 7 : पुणे शहर में कमाने वालों की पेशेवर प्रोफ़ाइल : 2000 एवं 2007

	2000	**2007**
ऊपरी	09	09
ऊपरी मध्य	17	20
मध्य	26	23
निचला मध्य	24	21
गरीब	14	15
बहुत गरीब	10	12
संख्या	10,073	816

हालाँकि हमारे पुणे के नमूने में ऊपर की तरफ जाने वाली गतिशीलता की शुद्ध दर अखिल भारतीय स्तर से ज्यादा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पुणे शहर में कोई बहुत बड़ा बदलाव हुआ है। 2000 की तुलना में पुणे की समूची पेशेवर प्रोफ़ाइल में एक उल्लेखनीय

स्थिरता और निरन्तरता है।[2] यह शायद पुणे और उसके आसपास के इलाकों में सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े उद्योगों के शानदार विकास के चलते ही हुआ है। 2007 का यह नमूना शहरी पेशेवरों के कार्यबल को ही अपने दायरे में लेता है जो पुणे के पेशेवर रूपान्तरण की इस नई लहर से जुड़ा हुआ है। फिर भी, पेशे पर आधारित वर्ग श्रेणियों के विभाजन के मामले में सिर्फ एक मामूली-सी तब्दीली ही दिखाई पड़ती है। हालाँकि इस निरन्तरता के भीतर एक छोटी लेकिन सम्भावित रूप से महत्त्वपूर्ण कहानी छिपी हुई है। जैसा कि तालिका 7 में दिखाया गया है, 2000 से 2007 तक सबसे ऊपर की श्रेणी को छोड़कर विभिन्न श्रेणियों में एक मामूली बदलाव नजर आता है। यह शहर शायद बिलकुल शिखर और एकदम निचले वाले तल के बीच एक स्पष्ट ध्रुवीकरण को उभरते हुए देख रहा है – 2000 में सबसे ऊपर की दोनों श्रेणियों (ऊपरी और ऊपरी मध्य) की मिलीजुली ताकत 26 प्रतिशत थी, जबकि उसके मुकाबले में सबसे निचली दोनों श्रेणियों की मिलीजुली ताकत 24 प्रतिशत थी। यह तस्वीर क्रमश: 29 और 27 के अनुपात में बदल गई है। इस अर्थ में, यह एक नए मध्यम वर्ग का उभरने के संकेत है।

4. जाति और गतिशीलता (Caste and Mobility)

इस समग्र तस्वीर की पृष्ठभूमि में, आइए अब हम मूल मुद्दे की तरफ मुड़ते हैं – कैसे जाति समूह पेशेवर गतिशीलता से जुड़े हुए हैं और उनमें से कौन-से शीर्ष की गतिशीलता (vertical mobility) के संकेत देते हैं? परम्परागत रूप से पुणे शहर उच्च जातियों के दबदबे और विभिन्न ऊँचे व्यावसायिक स्थानों में उनके फैलाव के लिए जाना जाता है। यही रुझान आज के समय में भी बना हुआ दिखाई पड़ता है – 2000 में उच्च जाति के 47 प्रतिशत कमाने वाले ऊँचे दर्जे के व्यवसायों में संलग्न थे; 2007 में यह अनुपात और भी बढ़कर 54 प्रतिशत हो गया। सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि सबसे निचली दोनों श्रेणियों में उच्च जाति के लोगों की संख्या बढ़ी है। यही रुझान मराठा-कुनबियों में देखा जा सकता है, हालाँकि यह थोड़ा कमजोर है : यहाँ ऊपरी और ऊपरी मध्य पेशों के अनुपात में थोड़ी-सी वृद्धि है और जो लोग सबसे निचली दो पेशेवर श्रेणियों से जुड़े हैं उनमें भी मामूली वृद्धि हुई है। अन्य पिछड़े वर्ग (Other Backward Classes – OBCs) के बारे में तस्वीर थोड़ी उलटी नजर आती है – ऊपरी छोर पर ज्यादा फायदा नहीं है, लेकिन निचले स्तर पर निश्चित रूप से लाभ हुआ है। और लगता है कि दलित एक बार फिर से गाड़ी पकड़ने में चूक गए हैं। यह सही है कि 2000 की तुलना में कुछ और दलित ऊँचे व्यवसायों में देखे गए हैं, लेकिन यह भी सच्चाई है कि बहुत निचले स्तर के पेशों में दलितों की संख्या 8 प्रतिशत की बहुत बड़ी दर से बढ़ी है, यहाँ पहली बात किसी भी तरह दूसरी की भरपाई नहीं कर सकती।

तालिका 8

पुणे शहर में जाति और पेशेवर सम्बन्धों के पैटर्न (2000-07)

	ऊँची जातियाँ		मराठा कुनबी		अन्य पिछड़े वर्ग		अनुसूचित जातियाँ		अन्य	
	2000	2007	2000	2007	2000	2007	2000	2007	2000	2007
ऊपरी	22	29	05	08	05	03	02	03	11	04
ऊपरी मध्यम	25	25	16	22	16	19	06	08	22	32
मध्यम	37	23	33	29	24	22	19	17	23	19
निचली मध्यम	08	06	26	17	27	33	31	24	24	24
खराब	06	12	14	16	17	15	18	16	14	15
बहुत खराब	02	05	06	08	11	08	24	32	06	07
संख्या	1,552	142	2,354	218	1,880	161	1,753	169	2,534	126

संख्या = 10,073 (2000) और 816 (2007)

तालिका 8 सिर्फ दो अलग-अलग समय पर विभिन्न जाति समूहों की पेशेवर प्रोफ़ाइल की तुलना करती है। यदि हम एक वृहत्तर समय सन्दर्भ पर विचार करते हैं तो ऐसा लगता है कि मराठा-कुनबियों और दलितों ने ऊपर उठने वाली गतिशीलता के मामले में लाभ उठाया है। अन्य पिछड़े वर्गों में इस गतिशीलता की शुद्ध दर 22 प्रतिशत है, उच्च जातियों में यह 25 प्रतिशत, मराठा-कुनबियों में 33 प्रतिशत और दलितों में 35 प्रतिशत है। दूसरी तरफ, जिन परिवारों में कोई गतिशीलता नहीं दिखी, उनमें अन्य पिछड़े वर्गों का हिस्सा 28 प्रतिशत के ऊँचे स्तर पर है, और दलितों में भी ऐसा ही है। ऊँची जातियों में यह 25 प्रतिशत और मराठा-कुनबियों में यह सबसे कम (20 प्रतिशत) है। हालाँकि, गतिहीन परिवारों का अनुपात, गतिशीलता के हमारे विश्लेषण के लिए एकमात्र प्रासंगिक सूचक नहीं हो सकता। यदि हम गतिहीन परिवारों की पूरी प्रोफ़ाइल का परीक्षण करते हैं तो गतिहीनता लाजिमी तौर पर निचले स्तर की पेशेवर स्थिति की सूचक नहीं है। गतिहीन परिवारों के नमूनों में से सिर्फ 15 प्रतिशत ही खराब या बहुत खराब पेशों में काम कर रहे हैं, जबकि वास्तव में उनके 50 प्रतिशत परिवार ऊपरी और ऊपरी मध्य वर्गों में आते हैं। इसलिए गतिशीलता की सीमा का आकलन करने के लिए सही परीक्षण जाति समूहों में नीचे की तरफ के रुझानों में होगा। यदि हम नीचे की ओर गतिशील परिवारों की प्रोफ़ाइल की जाँच करें तो नमूनों में शामिल लगभग 45 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जो खराब या बहुत खराब पेशों से जुड़े हुए हैं। फिर भी अध्ययन की सबसे विस्मयकारी खोज यही होगी कि पिछली चार पीढ़ियों में

सबसे ज्यादा फायदा मराठा-कुनबियों को ही हुआ है और उन्होंने ऊपर की तरफ गतिशीलता का एक ऊँचा स्तर प्राप्त किया है; उनके जीवन में गतिहीनता के निशान बहुत ही कम देखने को मिलते हैं। हालाँकि दलित सबसे ज्यादा ऊपर की तरफ बढ़े हैं लेकिन वो गतिहीनता से उबर नहीं पाए हैं। इसने अन्य पिछड़े वर्गों को अनिश्चितता की स्थिति में जकड़ लिया है। जहाँ ज्यादातर दूसरे लोगों को फायदा पहुँचा है, वहीं पुणे शहर में अन्य पिछड़े वर्ग के लोग इसका ज्यादा लाभ नहीं उठा पाए हैं, तालिका 10 इन्हीं रुझानों को रेखांकित करती है।

तालिका 9 : प्रमुख जाति समूहों में अन्तर-पीढ़ी पेशेवर गतिशीलता (2007)
(चार पीढ़ियों के दौरान)

	ऊँची जातियाँ	**मराठा-कुनबी**	**अन्य पिछड़ा वर्ग**	**अनुसूचित जातियाँ**	**अन्य**	**कुल**
ऊपर की तरफ गतिशीलता	43	52	39	52	32	45
नीचे की तरफ गतिशीलता	18	19	17	17	21	17
कोई गतिशीलता नहीं	25	20	28	28	27	22
विषम पैटर्न	14	09	16	16	20	15

संख्या = 1,078

तालिका 10 : गतिशीलता के बदलते रिकार्ड वाले समूहों की जाति प्रोफ़ाइल

	ऊपर की तरफ गतिशील	**नीचे की तरफ गतिशील**	**कोई गतिशीलता नहीं**	**विषम पैटर्न**	**कुल**
ऊँची जातियाँ	17	18	20	17	18
मराठा-कुनबी	33	31	25	17	28
अन्य पिछड़ा वर्ग	16	19	24	20	19
अनुसूचित जातियाँ	24	15	15	28	21
अन्य	10	17	17	19	14

संख्या = 1,078

आँकड़ों का एक साधारण अध्ययन सुझाता है कि दलितों और मराठों ने पिछली चार पीढ़ियों में फायदा उठाया है। हालाँकि, मराठों और दलितों के बीच ऊपर की तरफ उठने वाली गतिशीलता के इस रुझान को एक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने की जरूरत है। क्या हम यह कहते हैं कि दलित ऊँची जातियों के मुकाबले ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रहे हैं? क्या यह तालिका 8 में दिखाई गई पेशेवर श्रेणियों की जाति प्रोफ़ाइल की तस्वीर से मेल खाता है? यदि हम इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे को ध्यान में रखें कि इस दौड़ में गतिशीलता सूचकांक (MI) पर एक जाति समूह शुरू कहाँ से होता है तो शायद एक बेहतर समझ बन सकती है। हमारा सूचकांक पिछली चार पीढ़ियों में आगे बढ़ने वाले परिवारों का एक रिकॉर्ड रखेगा। हालाँकि, हमें ऊपर की तरफ जाने वाली गतिशीलता की इस यात्रा के सामाजिक सन्दर्भ (social trajectory) के प्रति भी संवेदनशील होने की जरूरत है। तालिका 11 से 15 में इन्हीं विभिन्न विषम रास्तों को दिखाने की कोशिश की गई है। इससे इस बात का अन्दाजा होता है कि किस जाति ने अपना सफर कहाँ से शुरू किया था।

कोई जाति समूह ऊपर की तरफ बढ़ता हुआ लग सकता है, लेकिन ऊपर की ओर कहाँ से? मध्यम दर्जे की पेशेवर स्थिति से ऊपर की ओर बढ़ना और बिलकुल निचली पेशेवर स्थिति से शुरुआत करना, दोनों में फर्क है। पहली स्थिति में समूह के पास आगे बढ़ने के साधन होते हैं; जबकि दूसरी स्थिति तो उस समूह के आगे बढ़ने की क्षमता को जकड़ लेती है, उसमें रुकावट बन जाती है। मिसाल के तौर पर, सबसे ऊपर की तीनों पेशेवर श्रेणियों में, तीन पीढ़ी पहले (दादा के समय) ऊँची जाति के लोगों को दूसरे समूहों के मुकाबले स्पष्ट रूप से लाभ हासिल थे। जबकि दूसरी तरफ उसी पीढ़ी के 59 प्रतिशत दलित काफी निचले स्तर के काम-धन्धों में लगे हुए थे। इस प्रकार, दलितों की ऊपर की तरफ की गतिशीलता सबसे निचले बिन्दु से शुरू होती है। इसी तरह, तालिका 15 यह भी दिखाती है कि क्यों दूसरे जाति समूहों के मुकाबले अन्य पिछड़ा वर्ग की गतिशीलता का पैटर्न इतना विषम है। कारीगर और छोटे किसान होने के नाते तीन पीढ़ी पहले अन्य पिछड़ा वर्ग जातियों के लोग मध्य या निचले पेशों में संलग्न थे। कृषि से औद्योगिक अर्थव्यवस्था और ग्रामीण से शहरी माहौल की तरफ संक्रमण के दौरान अन्य पिछड़े वर्ग दोनों तरह से फैल गए – कभी-कभार निचले पेशों की तरफ और कुछ मौकों पर थोड़े ऊँचे पेशों की तरफ।

तालिका 11 : ऊँची जाति की चार पीढ़ियों का पेशेवर प्रोफ़ाइल

	दादा	पिता	नमूने में शामिल पीढ़ी	बेटा / बेटी
उच्च	11	16	29	38
उच्च मध्यम	34	33	25	27

मध्यम	39	25	23	25
निम्न मध्यम	06	13	06	02
खराब	06	08	12	07
बहुत खराब	05	06	05	02
संख्या	118	276	216	92

तालिका 12 : मराठी-कुनबी लोगों की चार पीढ़ियों का पेशेवर प्रोफ़ाइल

	दादा	पिता	नमूने में शामिल पीढ़ी	बेटा / बेटी
उच्च	00	02	08	16
उच्च मध्यम	11	12	22	26
मध्यम	19	36	21	29
निम्न मध्यम	37	33	17	13
खराब	09	09	15	12
बहुत खराब	24	08	07	04
संख्या	54	306	142	68

तालिका 13 : अन्य पिछड़े वर्गों की चार पीढ़ियों का पेशेवर प्रोफ़ाइल

	दादा	पिता	नमूने में शामिल पीढ़ी	बेटा / बेटी
उच्च	02	02	03	11
उच्च मध्यम	15	12	19	16
मध्यम	16	25	22	21
निम्न मध्यम	41	36	33	35
खराब	18	18	15	14
बहुत खराब	08	07	08	03
संख्या	100	202	161	63

तालिका 14 : अनुसूचित जातियों की चार पीढ़ियों का पेशेवर प्रोफ़ाइल

	दादा	पिता	नमूने में शामिल पीढ़ी	बेटा / बेटी
उच्च	00	00	03	03

उच्च मध्यम	03	04	08	04
मध्यम	09	23	17	16
निम्न मध्यम	13	24	24	27
खराब	16	17	16	27
बहुत खराब	59	32	32	23
संख्या	93	203	169	75

ऊँची जातियों को देखने पर हम पाते हैं कि उनकी यात्रा उनकी स्थिति को मजबूत करने की रही है। चार पीढ़ी पहले, ऊपर की दो पेशेवर श्रेणियों में 45 प्रतिशत ऊँची जाति के थे। उनके पास इस अर्थ में बहुत सीमित अड़चन भी थी कि सबसे निचली तीन श्रेणियों में उनका हिस्सा सिर्फ 17 प्रतिशत था और नीचे की दो श्रेणियों में तो सिर्फ 11 प्रतिशत ही था। चूँकि ऊपर की दो श्रेणियों में उनका हाथ ऊपर था, इसलिए इस बात को समझना थोड़ा मुश्किल है कि एक पीढ़ी बाद ऊँची जाति के लोगों का हिस्सा निचले दर्जे के काम-धन्धों में क्यों बढ़ गया। यह पहेली मौजूदा पीढ़ी (जिसमें से नमूने लिए गए) में भी वैसी ही बनी हुई है। आखिरकार, हुआ यह है कि ऊँची जातियों की सबसे कम उम्र की पीढ़ी की स्थिति और भी मजबूत हुई है, क्योंकि ऊपर के दो पेशेवर समूहों में तीन में से लगभग दो लोग ऊँची जातियों से ही हैं। मराठों की शुरुआत नुकसान से होती है। उनमें हर तीन में से दो लोग ऐसे थे जो सबसे निचली दो श्रेणियों के पेशों में लगे हुए थे, और शिखर पर तो कोई भी नहीं था। अगली पीढ़ी में हम देखते हैं कि मध्यम दर्जे के कामों में उनकी संख्या बढ़ रही है और सबसे नीचे की श्रेणी में गिरावट आ रही है। हमारे द्वारा लिए गए नमूनों में से, 30 प्रतिशत लोग सबसे ऊपर की दो पेशेवर श्रेणियों में से हैं। अन्ततः, सबसे कम उम्र की पीढ़ी ऊँची पेशेवर स्थितियों की तरफ तेजी से बढ़ रही है। इस तरह गतिशीलता कुछ सीमित नुकसान से शानदार लाभ की तरफ है।

अन्य पिछड़ा वर्ग परिवारों के लोग निम्न मध्यम पेशों में फँसे हुए हैं। 41 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग परिवारों की शुरुआत निम्न मध्यम पेशों से होती है। अगली पीढ़ी सिर्फ कुछ हद तक ही ऊपर उठने में सफल हुई है, लेकिन ऊपर की दो श्रेणियों तक नहीं पहुँच पाई। हम देखते हैं कि अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों की मात्र तीसरी पीढ़ी (जिसमें उत्तरदाता शामिल हैं) में पाँच में से कम-से-कम एक व्यक्ति ऐसा है जो ऊपर की दो श्रेणियों में पहुँचा है। जबकि युवा पीढ़ी में इस अनुपात में और सुधार हुआ है, फिर भी 35 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग के लोग आज भी निचली मध्यम श्रेणी में ही देखे जाते हैं। दूसरे सभी समूहों के उलट, दलितों के नुकसान का इतिहास बहुत लम्बा और मजबूत रहा है – चार पीढ़ी पहले दलितों का 75 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा सबसे निचली दो पेशेवर श्रेणियों में संलग्न था। इसलिए, ऊपर की तरफ गतिशीलता का मतलब

इन दो श्रेणियों से दूर जाना था; उत्तरदाता की दादा-दादी की पीढ़ी में 75 प्रतिशत से माता-पिता की पीढ़ी तक 50 प्रतिशत दलित निचली दो श्रेणियों में पाए गए। उत्तरदाता की पीढ़ी ने पहली बार कुछ हद तक सही मायनों में ऊपर की तरफ गतिशीलता हासिल की है और ऊपर की दो श्रेणियों में प्रवेश किया (हालाँकि सिर्फ 11 प्रतिशत ही)। दलितों की सबसे युवा पीढ़ी में यह प्राप्ति उनके हाथ से फिसलती दिखाई पड़ती है। हालाँकि सबसे निचले पेशों में संलग्न लोगों का हिस्सा पहले से नीचे की तरफ गया है, लेकिन वास्तव में ऊपरी पेशों में काम करने वाले लोगों का हिस्सा सबसे युवा पीढ़ी में कम हुआ है। इससे यही लगता है कि चार पीढ़ियों में दलितों की ऊपर की तरफ गतिशीलता का रिकॉर्ड सतही ही है।

तालिका 11 से 14 से जो बात उभरकर आती है वह यह है कि ऊँची जातियों और मराठा-कुनबियों दोनों के मामले में जो प्रगति हुई है, पिछली चार पीढ़ियों में वहाँ कमोबेश एक निरन्तरता देखी जा सकती है, और फायदे अब सबसे युवा पीढ़ी में समेकित हैं। इससे उन्हें भौतिक रूप से और जाति पदानुक्रम में अपनी “ऊँची” स्थिति को मजबूत करने में मदद मिलती है। इसके विपरीत, दलितों की ऊपर की तरफ गतिशीलता बस निचले मध्य स्तर में ही फँसी प्रतीत होती है। यह सही है कि पिछली कुछ पीढ़ियों में सबसे निचले पेशों में उनके अत्यधिक केन्द्रीकरण में कुछ हद तक तो कमी आई है, फिर भी ऊपरी दर्जे के पेशों में उचित मात्रा में प्रवेश कर पाने में दलितों की अक्षमता तालिका 14 में स्पष्ट है। यही वो कीमत है जो उन्हें शुरुआती बिन्दु की अपनी असहाय स्थिति के लिए चुकानी होती है।

5. जातिगत गतिशीलता को सन्दर्भित करना (Contextualising Caste Mobility)

इस खण्ड में, हम विभिन्न जाति समूहों की पेशेवर गतिशीलता का सन्दर्भ पेश करते हैं।

क्या शहर सचमुच ऐसी जगह है जो ऊपर की ओर गतिशील है? यह ध्यान रखना जरूरी है कि ऊपर की तरफ गतिशीलता की समग्र घटना बहुत बड़ी नहीं है। शायद समाज के एक बहुत छोटे हिस्से को छोड़कर पीढ़ियों में ऊपर की ओर गति काफी धीमी और विषम रही। यह ज्यादातर पुरुषों और महिलाओं की उम्मीदों के उलट है कि उनके बेटे-बेटियाँ उनसे बेहतर होंगे। निश्चित तौर पर यह बात सामने आती है कि सिर्फ 28 प्रतिशत ही “शुद्ध” रूप से आगे बढ़ पाए हैं, और 22 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जो गतिशीलता के मामले में गतिशीलता सूचकांक पर स्थिर रहे हैं – वहीं पर अटके हुए हैं जहाँ पर वो कुछ पीढ़ियाँ पहले थे, इसे देखते हुए कुल मिलाकर स्थिति वहीं-की-वहीं ही नजर आती है। ऐसा लगता है कि बड़ी उम्मीदों के मुकाबले शहरों में ऊपर की तरफ गतिशीलता के लिए गुंजाइश सीमित ही है। ऊपर की तरफ गतिशीलता के रुझान का

अनुमान लगाने में जिस दूसरे कारक को भी ध्यान में रखना जरूरी है वह है, “शुरुआत” कहाँ से हुई थी, जिसपर हम पिछले खण्ड में बात कर चुके हैं। जबकि समाज के कई वर्गों में हमें ऊपर की तरफ गतिशीलता नजर आ सकती है, हो सकता है कि उनकी परम्परागत पेशेवर प्रास्थिति वैसी ही न रही हो और इस प्रकार, वहाँ ऊपर की तरफ गतिशीलता का मतलब सिर्फ निचली जगहों से बाहर आना ही होगा।

तालिका 15 : विभिन्न शुरुआती बिन्दु : जातियों में दादा-दादियों का पेशेवर प्रोफ़ाइल

	ऊँची जातियाँ	मराठा-कुनबी	अन्य पिछड़े वर्ग	अनुसूचित जातियाँ
उच्च	11	00	02	00
उच्च मध्यम	34	11	15	03
मध्यम	39	19	16	09
निम्न मध्यम	06	37	41	13
खराब	06	09	18	16
बहुत खराब	05	24	08	59
संख्या	118	54	100	93

तालिका 11 से 15 के लिए दादा-दादी की पीढ़ी के लिए कुल संख्या – 392; पिता की पीढ़ी की – 1,049; उत्तरदाता की – 816 और बेटे / बेटी की – 320.

एक अन्य मुद्दा नीचे की तरफ गतिशीलता का मामला है जिसका सामना ज्यादातर जाति समूहों ने किया है – ऊँची जातियों और मराठा-कुनबियों और अन्य पिछड़े वर्गों में यह 18 प्रतिशत है और दलितों में 12 प्रतिशत। सामान्यत: शहर के विकास और आर्थिक उन्नति को कम-से-कम कुछ वर्गों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने के लिए जाना जाता है। लेकिन जिसे हम देख रहे हैं वह एक अधिक आम प्रवृत्ति है। तो क्या इसका मतलब यह है कि नीचे की तरफ का झुकाव दूसरे कारकों की परवाह किए बगैर सभी सामाजिक वर्गों को प्रभावित करता है? बहुचर रैखिक प्रतिगमन / लौटाव (multivariate linear regressions) एक आश्रित चर के रूप में नीचे की तरफ गतिशीलता के साथ महत्त्वपूर्ण सहसम्बन्ध रखने वाले किसी एक विशेष कारक को नहीं दिखाते हैं। नीचे की ओर गतिशील परिवारों के उत्तरदाताओं की प्रोफाइल यह दिखाती है कि 64 प्रतिशत परिवार निम्न या निम्न मध्यम पेशों में काम कर रहे हैं। शिक्षा का स्तर नीचे की ओर गतिशीलता पर कोई सीधा प्रभाव नहीं डालता है क्योंकि इन परिवारों में कमाने वालों में से 70 प्रतिशत ने कम-से-कम माध्यमिक विद्यालय स्तर तक पढ़ाई की है। जहाँ तक गतिशीलता और जाति के सम्बन्धों की बात है, तो नीचे की तरफ गतिशील परिवार सभी जाति समूहों से आते

हैं, जिनमें मराठा-कुनबी और ऊँची जातियाँ भी शामिल हैं। इन दोनों समूहों के मामले में नीचे की तरफ खिसकने वाले परिवारों में उनका हिस्सा नमूनाकृत आबादी में या तो उनके कुल हिस्से के बराबर है या थोड़ा ही ज्यादा। रैखिक प्रतिगमन (linear regressions) दिखाते हैं कि कैसे जाति का नीचे की तरफ खिसकने की प्रवृत्तियों के साथ सांख्यिकीय रूप से कोई महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है (तालिका 16 से 18)। नीचे की तरफ गतिशीलता की यह प्रवृत्तियाँ हर जाति के भीतर एक सम्भावित पेशेवर और आर्थिक ध्रुवीकरण के उभरने का संकेत देती हैं।

जाति समूह कितने गतिशील हैं? जैसा कि हमने शुरू में ही ध्यान दिया था, सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है : क्या पेशेवर परिवेश (occupational matrix) में समूहों के गतिमान होने के मामले में जाति कोई मायने रखती है? एक तरफ तो जाति परम्परागत रूप से सामाजिक स्तरीकरण (social stratification) की एक प्रणाली के रूप में बची रही है क्योंकि उसमें न सिर्फ समूहों के संचलन पर निगरानी रखने की क्षमता है, बल्कि वह समाज के पेशेवर नक्शे को भी विनियमित करती है। दूसरी तरफ यह बात भी आमतौर पर जानी जाती है कि समूह – और उससे भी ज्यादा व्यक्ति – जाति-आधारित पेशेवर अलगाव के तर्क-जाल से बच निकलने या उसे चुनौती देने में कामयाब रहे हैं। लेकिन हमारा सवाल यह नहीं है कि जाति पुरुषों और महिलाओं की पेशेवर नियतियों पर अपना नियंत्रण बनाए रखने में किस हद तक सफल रही है; हमारा सवाल यह है कि क्या जाति आज भी जाति पदानुक्रम में समूहों के लिए पेशेवर चुनावों की उपलब्धता और पहुँच को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था के रूप में काम करती है। खासतौर पर यह पड़ताल एक श्रेणी के रूप में जाति (जाति समूह) के प्रभाव का आकलन करने पर केन्द्रित है जो पूरे समूहों को एक विशेष तरह के पेशे के दायरे में बाँध देती है। क्या जाति (जाति समूह) समूहों और उनके सदस्यों की उच्च पेशेवर स्तर पर जाने की क्षमता पर रोक लगाती है? इसी परिकल्पना को थोड़ी अलग और ज्यादा सख्त संरचना के रूप में देखा जा सकता है : कि जाति समूहों को वहीं रहने के लिए मजबूर करती है जहाँ पर वे हैं या उनके नीचे गिरने का कारण बनती है (आधुनिक पेशेवर मौकों के उभरने की स्थिति में)।

पेशों के सन्दर्भ में समूहों की ऊपर की ओर बढ़ने की क्षमता पर परम्परागत तौर पर निर्धारित पदानुक्रम और सीमाओं का प्रभाव एक सामूहिक प्रभाव पैदा करेगा – कुछ जाति समूह एक विशेष स्तर पर व्यवसायों में बड़ी संख्या में पाए जाएँगे। ऐसे ही कुछ सामूहिक प्रभावों का पता उन लोगों ने लगाया जो पहले दर्जे की सरकारी नौकरियों या बड़े और छोटे पेशों, आदि के बारे में पड़ताल कर रहे थे, पाणिनी (1996: 31-47) भी इस परिघटना की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। सामूहिक प्रभाव के इस सवाल को और आगे ले जाने की जरूरत है – वर्ण-धर्म मानचित्रण (caste-occupation mapping) को ध्यान में रखने के बजाय इसे पीढ़ीगत बदलावों,

यदि कोई हो, के सन्दर्भ में रखकर देखना अधिक उपयोगी हो सकता है। यहाँ प्रतिवेदित किया गया कार्य यही करता है।

पिछले खण्ड में जिन निष्कर्षों का जिक्र किया गया है वे दिखाते हैं कि आमतौर पर जाति पेशेवर गतिशीलता के साथ बहुत मजबूती से जुड़ी हुई नहीं है। साथ ही, जाति निश्चित रूप से ऊपर उठने वाली गतिशीलता का अनुमान लगाने में एक प्रमुख कारक है। दूसरे शब्दों में, ऊपर जाने वाली गतिशीलता के प्रयोजनों के लिए जाति मायने रखती है; जबकि यह जरूरी नहीं है कि ठहराव और / या नीचे की तरफ जाने वाली गतिशीलता के लिए जाति ही मुख्य रूप से जिम्मेदार हो। इस बात को भी ध्यान में रखना जरूरी है कि ऊपर उठने की गतिशीलता के मामले में भी ऊपर उठने की गतिशीलता की सीमा अलग-अलग जाति समूहों में अलग-अलग होती है – विशेष रूप से अन्य पिछड़े वर्गों को ऊपर उठने की गतिशीलता के रुझान से लाभ होता दिखाई नहीं देता। तालिका 9 और 10 दिखाती हैं कि अन्य पिछड़ा वर्ग के रूप में वर्गीकृत जातियों में ठहराव (stagnation) ही ज्यादा प्रमुख लक्षण है। जहाँ तक उनकी ऊपर उठने गतिशीलता का सवाल है, वहाँ भी वे दूसरों के मुकाबले पिछ्ड़ रहे हैं। दलितों के विपरीत, अन्य पिछड़े वर्गों को आरक्षण प्रणाली का पूरा समर्थन हासिल नहीं था, हालाँकि उनके लिए सांकेतिक आरक्षण मौजूद था। दूसरी, और शायद इससे भी महत्त्वपूर्ण, बात यह है कि अन्य पिछड़े वर्गों की स्थिति हमें इस तथ्य के प्रति सचेत करती है कि वे कोई सजातीय सामाजिक समूह नहीं होकर केवल एक प्रशासनिक श्रेणी हैं। जहाँ तक राजनीतिक लामबन्दी, जातीय पदानुक्रम और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के शिकार होने की चेतना का सवाल है, भिन्न-भिन्न अन्य पिछड़े वर्गों के बीच अलग-अलग जातियाँ अलग-अलग पड़ाव पर हैं। ये कारक अन्य पिछड़े वर्गों पर गतिशीलता का एक विषम पैटर्न थोपते हैं। इसके अलावा अन्य पिछड़ा वर्ग समूह में शामिल कई जातियों के एक ही धरातल पर मौजूद अन्य पेशों में जाने की सम्भावना ज्यादा है (मिसाल के तौर पर, कारीगरी से जुड़ी जातियाँ कारीगरी और कौशल आधारित दूसरे नए पेशों को अपनाती हैं या सेवा-सम्बन्धी जातियाँ (service castes) अर्ध-आधुनिक प्रकृति के निचले सेवा पेशों में प्रवेश करती हैं; अधिक विस्तार के लिए देशपांडे 2004 देखें)। इस तरह हम पाते हैं कि दो अलग-अलग जाति समूह ऊपर की तरफ जाने वाली गतिशीलता की ओर बढ़ने के सबसे बड़े लाभार्थी प्रतीत होते हैं – मराठा-कुनबी और दलित। एक तरह से यह कोई हैरानी की बात नहीं है। मराठा-कुनबी लाभ उठाने वालों में से हैं क्योंकि उनमें आधुनिक शहरी क्षेत्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले मौकों का फायदा उठाने की योग्यता है। उनका ऐतिहासिक सत्ता बोध और राज्य संस्थानों के साथ सम्बन्ध उन्हें अपने रणनीतिक स्थान को उपयुक्त बनाने और कृषि कार्यों से आगे बढ़ने में सक्षम बनाते हैं। मराठों की भौतिक स्थिति (परम्परागत रूप से पुणे और उसके आसपास के इलाकों में बसे होना) भी उन्हें ऊँचे दर्जे के पेशों की तरफ बढ़ने में (कम-से-कम उनके एक हिस्से को) मदद करती है। दलित मुख्य रूप से इस तथ्य के कारण ऊपर की तरफ

गतिशीलता दर्ज करते हैं कि पेशेवर पदानुक्रम के सबसे निचले तल पर होने की वजह से “बहुत खराब” पेशे की श्रेणी से “खराब पेशे” की श्रेणी की तरफ एक छोटा-सा बदलाव भी ऊपर की तरफ गतिशीलता के रूप में सामने आता है। इसलिए, ऊपर की तरफ की उनकी यात्रा मराठा-कुनबियों से अलग है। असल में, दलितों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अभी भी बहुत निचले पेशों में फँसा हुआ है (पुणे के दलितों पर आगे चर्चा के लिए देखें; देशपांडे 2007)।

तालिका 16 : बहुचर रैखिक प्रतिगमन / लौटाव (Multivariate Linear Regression)* – ऊपर की तरफ गतिशीलता में किन-किन चीजों का योगदान रहता है

	बी	मानक त्रुटि	बीटा	टी	सिग्मा (Sig)
ऊँची जातियाँ	.131	.116	.099	2.607	.124
मराठा-कुनबी	.179	.045	.166	4.004	.000
अन्य पिछड़े वर्ग	.060	.048	.049	1.261	.208
अनुसूचित जातियाँ	.209	.049	.173	4.307	.000
निरक्षर	-.049	.054	-.032	-.927	.354
माध्यमिक विद्यालय तक	.001	.040	.001	.032	.974
कॉलेज और उससे ऊपर	.039	.043	.037	.934	.350
जेंडर	.01	.029	.013	.435	.663
रुकने की अवधि	.03	.051	.019	.670	.503

आश्रित चर (dependent variable) – ऊपर की तरफ गतिशीलता

तालिका 17 : प्रतिगमन / लौटाव : कौन-सी चीजें नीचे की तरफ गतिशीलता में योगदान देता है

	बी	मानक त्रुटि	बीटा	टी	सिग्मा (Sig)
ऊँची जातियाँ	-.016	.037	-.018	-.457	.648

* एक ऐसी सांख्यिकीय तकनीक जो एक बदलती हुई राशि (variable) के विभिन्न मूल्यों के बारे में दो या दो से अधिक अन्य बदलती राशियों (variables) के आधार पर अनुमान लगाती है।

मराठा-कुनबी	-.021	.033	-.027	-.649	.516
अन्य पिछड़े वर्ग	-.03	.036	-.037	-.936	.349
अनुसूचित जातियाँ	-.068	.036	-.037	-.936	.349
निरक्षर	-.033	.040	-.029	-.836	.403
माध्यमिक विद्यालय तक	-.022	.029	-.031	-.770	.442
कॉलेज और उससे ऊपर	-.014	.032	-.018	-.453	.650
जेंडर	.013	.021	.019	.650	.516
रुकने की अवधि	-.037	.038	-.028	-.991	.322

आश्रित चर – नीचे की तरफ गतिशीलता

तालिका 18 : प्रतिगमन / लौटाव : कौन-सी चीजें कोई पेशेवर गतिशीलता नहीं होने देतीं

	बी	मानक त्रुटि	बीटा	टी	सिग्मा (Sig)
ऊँची जातियाँ	-.002	.041	-.002	-.061	.951
मराठा-कुनबी	-.067	.036	-.076	-1.843	.066
अन्य पिछड़े वर्ग	.002	.039	.003	.068	.946
अनुसूचित जातियाँ	-.086	.040	-.088	-2.19	.029
निरक्षर	-.007	.044	-.006	-.168	.866
माध्यमिक विद्यालय तक	.049	.032	.061	1.526	.127
कॉलेज और उससे ऊपर	.006	.035	.008	.195	.846
जेंडर	.048	.023	.061	2.080	.038
रुकने की अवधि	.013	.042	.010	.333	.739

आश्रित चर – कोई गतिशीलता नहीं

मराठों को लाभ? दूसरे सभी जाति समूहों की तुलना में मराठा-कुनबी जाति समूह पिछली चार पीढ़ियों से लगातार लाभ की स्थिति में रहा है। शायद इस विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि पुणे के मराठों के बीच विभाजन करने वाला एक तीव्र ध्रुवीकरण हो रहा है। जबकि ज्यादातर समुदायों में आमतौर पर ही विभाजन होता है, लेकिन मराठा-कुनबी समुदाय ऊपरी और निचले पेशेवर समूहों के बीच यह एक तीव्र ध्रुवीकरण की तरफ बढ़ता हुआ दिखाई देता है। हमारे आँकड़े इस विकास का संकेत देते हैं – तालिका 8 और 12 को सावधानीपूर्वक पढ़ने से यह पता चलता है कि अब जबकि मराठों का पेशेवर प्रोफ़ाइल तेजी से ऊपरी स्तरों पर एकाग्र दिखाता है, वहीं पेशेवर सोपान पर निचले भागों में रखे गए लोगों के अनुपात में भी वृद्धि हुई है। बेशक, मराठे परम्परागत तौर पर ही अमीर और कुलीन मराठा परिवारों और किसानों के बीच में बँटे रहे हैं। "मराठा" और "कुनबी" के बीच के अन्तर ने भी इस समुदाय के अन्दरूनी विभाजन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, इन दोनों में ही परम्परागत हैसियत के आधार पर अपनी श्रेष्ठता मानने के विचारों की पृष्ठभूमि पहले से थी। लोकतंत्र के उभार ने सार्वजनिक जीवन में इन भेदों को कमोबेश भ्रमित-सा कर दिया है। मराठा समुदाय की राजनीति हमेशा मराठा-कुनबी जाति समूह की एकता पर जोर देने की कोशिश करती है। फिर भी, इसके साथ ही, आधुनिक पूँजीवादी विकास और शहरीकरण, हरित क्रान्ति और राज्य में सहकारी चीनी कारखानों के माध्यम से नए मराठा नेतृत्व के उभार के साथ मराठा-कुनबी समुदाय के बीच अन्दरूनी विभाजन के नए पैटर्न सामने लाता है (मराठा राजनीति के सामने खड़े इन मुद्दों पर चर्चा के लिए देखें : देशपांडे 2006)।

6. पीढ़ियों के बीच गतिशीलता और स्थिरता (Mobility and Stability across Generations)

तालिका 11 से 14 को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर न सिर्फ जाति समूहों की तर्ज पर बल्कि विभिन्न पीढ़ियों और पेशेवर श्रेणियों में भी अलग-अलग प्रक्षेपवक्रों की पेचीदगियों का पता चलता है। सबसे पहले ऊँची जातियों पर नजर डालते हैं। उच्च व्यवसायों की श्रेणी में सीधी रेखा में बढ़ता हुआ उनका प्रक्षेपवक्र संयत प्रतीत होता है। उच्च-मध्यम व्यवसायों में तीसरी पीढ़ी (उत्तरदाता की पीढ़ी) को थोड़ा नुकसान हुआ प्रतीत होता है, और यह वही पीढ़ी है जिसे बड़ी संख्या के मामले में उच्च व्यवसायों तक पहुँचने का लाभ बड़े पैमाने पर हासिल हुआ है। दूसरी पीढ़ी के बाद से ऊँची जातियों का मध्यम पेशों में एक स्थिर अनुपात है; जबकि तीसरी पीढ़ी में निचले पेशों में काम करने वालों की संख्या में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है। यदि हम सिर्फ आखिरी दो पीढ़ियों पर नजर डालते हैं तो ऊँची जाति वालों का पैटर्न एकदम साफ दिखता है – ऊँचे पेशों में

वृद्धि, मध्यम में स्थिरता और निचले पेशों में गिरावट – समूचे कल्याण और उन्नति की विशेषताएँ।

दलितों के मामले में दो चीजें सबसे ज्यादा उभरकर सामने आती हैं – पहली, ऊँचे व्यवसायों वाली श्रेणी किसी पठार जैसी दिखती है। इसका मतलब है कि चार पीढ़ियों से भी ज्यादा समय से दलित अभी भी बड़ी संख्या में ऊँचे व्यवसायों में नहीं हैं। दूसरी, हालाँकि बेहद निचले पेशों में पिछली चार पीढ़ियों के दौरान तेजी से गिरावट हुई है। कुछ हद तक तो यह पिछले सौ सालों के संघर्ष की वजह से है, और कुछ हद तक इस वजह से भी है कि बेहद निचले पेशों से जुड़े रहने की दमनकारी परम्परा से बच निकलने के उन्हें कुछ सीमित मौके ही हासिल हुए हैं। उच्च मध्यम व्यवसायों के मामले में भी, पहली तीन पीढ़ियों में लगातार वृद्धि नजर आती है, लेकिन चौथी पीढ़ी में वहाँ भी गिरावट हुई है। इसी तरह, जबकि दलितों की दूसरी पीढ़ी ने मध्यम व्यवसायों के मामले में ऊपर की तरफ की गतिशीलता का अनुभव किया, वहीं तीसरी पीढ़ी के दलितों ने वो चाल गँवा दी जिसे अब बस चौथी पीढ़ी में ही हासिल किया जाना है। दलितों के बीच स्पष्ट रूप से ऊपर की तरफ की गतिशीलता की कहानी को जटिल बनाने वाला तथ्य यह है कि बेहद निचले व्यवसायों में लगे हुए दलितों के अनुपात का नीचे की तरफ जाता हुआ ग्राफ़ निचले और निचले मध्यम पेशों में उनकी संख्या में उसी हिसाब से बढ़ भी रहा है। यह दलितों के बीच ऊपर की तरफ की गतिशीलता की सीमा को दर्शाता है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, मराठा-कुनबी चारों पीढ़ियों और सभी व्यावसायिक श्रेणियों में वास्तविक ऊपर उठने की गतिशीलता दर्शाते हैं। पहली से दूसरी पीढ़ी तक, दोनों छोरों पर ऊपर की तरफ एक स्पष्ट रुझान है; तीसरी पीढ़ी में यह जारी है और चौथी पीढ़ी में स्पष्ट रूप से बढ़ा हुआ है। मराठों का यह प्रक्षेपवक्र सिर्फ उच्च जातियों की अडिग स्थिरता और ऊपर की तरफ उनके बढ़ने से ही मेल खाता है। इससे उलट, अन्य पिछड़ा वर्ग समूह चार पीढ़ियों की अपनी यात्रा में सबसे कम स्पष्टता दिखाता है। या शायद हमें यह कहना चाहिए कि एक असाधारण गतिहीनता ही उसकी विशेषता है। चौथी पीढ़ी में ऊपरी व्यवसायों और बेहद निचले व्यवसायों दोनों में हुई मामूली ऊपर उठने की गतिशीलता को छोड़ दिया जाए, तो अन्य पिछड़ा वर्ग पिछली लगभग आधी सदी के विकास से अप्रभावित ही नजर आते हैं। लोकतांत्रिक राजनीति और पूँजीवादी विकास दोनों ही उनपर कुछ खास प्रभाव छोड़े बिना बस छूकर ही निकल गए प्रतीत होते हैं।

संक्षेप में, हमारा अध्ययन दिखाता है कि ऊँची जातियों ने अपना दबदबा खोया नहीं है, मराठों को लाभ होता रहता है; और दलितों को मंच के निचले सिरे पर कुछ हासिल करने के मौके

मिले हैं और कहने भर को शिखर पर वो नाममात्र के लिए आगे बढ़े हैं (हालाँकि सबसे निचले सिरे पर लाभ का सही मायनों में दूरगामी प्रभाव हो सकता है)। ऐसा लगता है कि महानगरों के हालात और पूँजीवादी विकास का जो आधुनिकतम दौर चल रहा है उससे निपटना अन्य पिछड़ा वर्ग के ज्यादातर हिस्सों के लिए बेहद मुश्किल होगा।

7. निष्कर्षपरक टिप्पणियाँ (Concluding Observations)

कुल मिलाकर, कुछ शहरी स्थितियों में ऊपर की तरफ एक मामूली रुझान है। इसका जाति के साथ एक पेचीदा सम्बन्ध है। कुमार एवं अन्य (2002: 2987) का तर्क है कि "एक खास वर्ग में पैदा होना इस बात को तय करता है कि कहाँ पहुँचा जाएगा। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनका तर्क है कि जाति गतिशीलता बताने वाली अच्छी भविष्यवक्ता नहीं है (वही; कुमार एवं अन्य 2002ए भी)। हालाँकि, दलितों ने वेतनभोगी वर्ग तक पहुँचने की अपनी सम्भावनाओं में सुधार किया है (कुमार एवं अन्य 2002ए: 4096)। हमारा अध्ययन भी दलितों के बीच ऊपर की तरफ गतिशीलता के इस रुझान का समर्थन करता है। यह सम्भव है कि उनके अध्ययन में जाति के महत्त्व को बेहद सीमित पाया गया हो, मुख्यत: क्योंकि गाँव में बसी जातियों को आज भी जाति से जुड़े पेशों के पदानुक्रमित ढाँचे से मुक्त करना मुश्किल लगता है और वह उसी तरह खेती-बाड़ी या केवल खेत मजदूरी के काम में फँसे हुए जी रहे हैं। साथ ही, उनके इस तर्क कि "किस वर्ग में पैदा होते हैं उससे फर्क पड़ता है" को अलग तरह से पढ़े जाने की आवश्यकता है – हमने देखा है कि एक या दो पीढ़ी पहले कुछ जाति समूह खास तरह की पेशेवर श्रेणियों में थे। ऐसा नहीं है कि "वैयक्तिक व्यक्ति" किसी दुर्घटनावश या क्षमता के बल पर किसी विशेष श्रेणी के स्थानों पर मौजूद थे; हमारे आँकड़े स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कुछ पीढ़ियों पहले विभिन्न जाति समूह ऐसे पेशों में थे जो स्पष्ट तौर पर भेदभाव पर टिके हुए थे और तालिका 8 वर्तमान समय पर उस ऐतिहासिक भेदभाव के असर को दिखाती है। इससे इस बात को बल मिलता है कि विभिन्न जाति समूहों में पेशेवर भिन्नताओं के कारण लिखते वक्त जाति की प्रासंगिकता को ध्यान में रखे जाने की जरूरत है।

कहाँ है जाति? समकालीन भारत में हमें शहरी परिस्थितियों की जटिलताओं पर ज्यादा जोर देने की जरूरत नहीं है। आधुनिक शहरी स्थानों में जाति समूहों (और व्यक्तियों के भी) के पेशेवर मार्ग की रूपरेखा के विकास पर जाति के प्रभाव में इतने सारे कारक मध्यस्थता करते हैं कि जाति का प्रभाव उतना स्पष्ट और मूर्त नहीं रह जाता है और शायद यह बात आधुनिक क्षेत्र में सामूहिक सम्बन्धों में जाति की प्रासंगिकता पर असर डालती है। इसका यह मतलब नहीं है कि शहरी निवासियों के सांस्कृतिक माहौल में जाति मौजूद नहीं है, बात इससे बिलकुल अलग है।

शहरी निवासी आज भी अपनी जाति के अन्दर ही विवाह को प्राथमिकता देंगे और अपनी जाति की प्रथाओं और पूर्वाग्रहों के जरिए ही दुनिया को देखेंगे। लेकिन शहरी निवासियों के सांसारिक-भौतिक जीवन और सांस्कृतिक-प्रतीकात्मक संसार के बीच एक स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है। इसका यह भी मतलब है कि पिछली पीढ़ियों की तुलना में ऊपर की तरफ बढ़ने में असमर्थता एक ऐसी सीमा है जो अकसर पारिवारिक इतिहास और / या दूसरे गैर-जाति कारकों की विशिष्टताओं की वजह से होती है। इसके विपरीत, ऊपर की तरफ की गति कहीं ज्यादा मजबूती से जाति के साथ बँधी होती है।

उदाहरण के लिए, हमारा अध्ययन संकेत करता है कि ऊपर की तरफ गतिशील करने के लिए जाति इस मायने में महत्त्वपूर्ण है कि मध्यम स्तर का किसान और दलित जातियाँ वास्तव में सही मायनों में तरक्की कर रही हैं। मराठा-कुनबी के मामले में यह संसाधनों, मौकों और शक्ति संरचना के कारण है और दलितों के मामले में सामाजिक जागृति की पृष्ठभूमि के साथ सकारात्मक कार्य और शहरी स्थिति के संयोग के कारण है। यह अध्ययन निश्चित रूप से उन लोगों को निराश करेगा जो निर्णायक तौर पर इस नतीजे पर पहुँचना चाहते हैं कि जाति लुप्त होती जा रही है और हमारे आधुनिक पूँजीवादी संसार में अप्रासंगिक होती जा रही है। समाजशास्त्र विषय में ऐसी साहित्य सामग्री बढ़ रही है जिसमें समकालीन भारतीय समाज को समझने के लिए एक प्रासंगिक श्रेणी के रूप में जाति की निरन्तरता को लेकर एक तरह की असहजता महसूस की जाती है। श्रीनिवास के बाद के काम में तर्क के इस रुझान को सामने लाया गया है (श्रीनिवास 2003)। हाल ही में, ए एम शाह ने इसी तरह का विश्लेषण पेश किया है (शाह 2007)। इस पृष्ठभूमि में, कुछ अध्ययन सही मायनों में भौतिक-सांसारिक सामाजिक सम्बन्धों के क्षेत्र में जाति की प्रासंगिकता को मापने की कोशिश करते हैं। हमारा अध्ययन इसी समाजशास्त्रीय विस्मृति (sociological amnesia) और जाति से दूर भागने की इच्छा को लेकर है। हमारा यह अध्ययन एक ऐसे सवाल को सम्बोधित करता है जिसकी जाँच-परख समाजशास्त्र में तुलनात्मक रूप से कम ही हुई है। इसलिए यह तर्क कि आधुनिक शहरी परिस्थितियों में जाति अपनी प्रमुखता या खासियत खो देगी / खो रही है, समाजशास्त्रीय रूप से ठोस प्रतीत होता है। हम समूहों के लिए उपलब्ध समृद्धि और अवसर संरचनाओं को परिभाषित करने में जाति की पकड़ को दूर करने के लिए आधुनिक सांसारिक क्षेत्र की सम्भावना और क्षमता से इंकार नहीं करते हैं। साथ ही, हमारा अध्ययन साफतौर पर यह दिखाता है कि ऊपर उठने की गतिशीलता के मामले में जाति अभी भी मायने रखती है।

दूसरी ओर, जाति विरोधी संघर्षों के विचारक और समर्थक हमारे आधुनिक जीवन में जाति की निरन्तर प्रासंगिकता को लेकर चिन्तित हैं। यह चिन्ता उन्हें यह विश्वास दिलाने के लिए प्रेरित

करती है कि जाति प्रणाली की चालाकी आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में प्रवेश करती है और यह कि आधुनिक सामाजिक व्यवस्था जातीय पदानुक्रम की एक पुनर्संरचना मात्र है। हमारा अध्ययन इस चिन्ता को दूर करने के लिए बाध्य है और विचारधारा से प्रेरित विश्वास का विरोध करता है। व्यवसाय के चयन और पेशेवर गतिशीलता की सम्भावनाओं के मामलों में, जाति की भूमिका को बेहद चौकस रहते हुए और सावधानी के साथ समझा जाना चाहिए – हमारे अध्ययन से पता चलता है कि शहरी सन्दर्भ में, ऊपर उठने की गतिशीलता के लिए स्थान निस्सन्देह मौजूद है और यह लगभग जाति से परे और सभी जातियों के लिए है। शहरी स्थिति और आधुनिक निर्माण एवं सेवा क्षेत्रों के मध्यस्थ कारक यकीनी तौर पर निम्न जाति की स्थिति में अन्तर्निहित प्रतिकूल प्रभावों को नियंत्रित करते हैं। दूसरे, अगर हम शुरुआती बिन्दु के मामले को नजरअन्दाज कर दें तो दलित अपने पेशों के मामले में काफी ऊपर उठने की गतिशीलता दर्ज करते हैं। तीसरे, इस बात का कोई सीधा प्रमाण नहीं है कि गतिहीनता और नीचे की तरफ गतिशीलता के मामले में जाति (या जाति समूह) मायने रखती है। असल में, यह तीसरा कारक पेशेवर गतिशीलता के साथ जाति के जुड़ाव में होने वाली सम्भावित गिरावट की तरफ इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, जाति, जाति समूहों के बीच पेशेवर विकास-मार्ग की रूपरेखा को तय करने वाला एकमात्र कारक नहीं है। इसलिए सबसे महत्त्वपूर्ण खोज यही होनी चाहिए कि जाति के सवाल से जुड़े विमर्श की शर्तों के बारे में सोचा जाए।

ऊपर की गई चर्चा कम-से-कम तीन मुद्दों पर ध्यान खींचती है। सबसे पहला, जाति आयाम को एकीकृत किए बिना भारत के वर्ग-चरित्र का नक्शा तैयार करना सम्भव नहीं है। मध्यम वर्ग की जाति संरचना में बढ़ती हुई विविधता से वर्ग स्थिति दिन-प्रतिदिन ज्यादा पेचीदा होती जा रही है (शेठ 1999ए)। उच्च मध्यम वर्ग में अब बड़ी संख्या में दरमियानी जातियाँ शामिल हैं। यही बात दरमियानी जातियों की चिन्ताओं और हितों को उभरते हुए मध्य वर्ग की चिन्ताओं में सबसे ऊपर ले आती है। निचले पेशों का इतिहास और ऊपर की तरफ गतिशील होने का अनुभव निश्चित तौर पर इन नई वर्ग संरचनाओं की स्व-चेतना को आकार देने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इसी तरह, प्रौढ़ पूँजीवादी तंत्र के कारण पेशेवर पदानुक्रम में नीचे की तरफ कोई भी गिरावट आसानी से जाति की पृष्ठभूमि पर आरोपित हो जाएगी। इसलिए, भौतिक प्रतिकूलता को पूँजीवादी विकास की सहायक तर्कसंगतता और कम सुविधा वाले वर्गों के भौतिक हितों को जगह देने में असमर्थता की बजाय पारम्परिक ढाँचों की चालाकी के चश्मे के माध्यम से समझा जाएगा। दूसरे, क्योंकि प्रत्येक जाति शीघ्रता से अन्दर-ही-अन्दर बँटती जाती है और सम्भवत: "बहु-वर्गीय" हो जाती है, उत्तरोत्तर जातियों या जाति समूहों के वर्गीय कार्य मुश्किल होते जाएँगे

और जाति-आधारित सामूहिक गतिविधि अपनी सीमाओं को बचाए रखने और पहचान की दावेदारियों में पड़कर अधिक-से-अधिक भीतर की तरफ मुड़ती चली जाती है। (देशपांडे द्वारा – 2006-08 – द्वारा पुणे विश्वविद्यालय के राजनीति और लोक प्रशासन विभाग में चल रहा जाति संघों का अध्ययन इसे काफी स्पष्ट रूप से सामने लाता है।) जाति गुटों के बारे में बनी अमूर्त अवधारणाएँ उत्तरोत्तर गूढ़ (esoteric – समझ में न आने वाली) और राजनीतिक तौर पर अव्यवहार्य होती चली जाएँगी। और फिर भी, जाति मुख्य बिन्दु बनी रहेगी जिसके इर्द-गिर्द काफी लामबन्दी होगी। इस तरह, जाति स्पष्ट रूप से सामूहिक कार्य का सांगठनिक सिद्धान्त बनी रहेगी। तीसरा, और शायद विरोधाभासी रूप में, मध्य वर्ग के केन्द्र में निचली जातियों – दलितों और अन्य पिछड़े वर्गों – का सीमित प्रवेश और उसके विपरीत, उनका निम्न व्यवसायों और निम्न वर्गीय माहौल में सिमटना अभी भी उन्हें निम्न वर्गों के रूप में सामूहिक कार्रवाई की सम्भावना के साथ पेश करता है; हालाँकि, उच्च व्यवसायों में प्रवेश की सम्भावनाओं के लिए दरवाजे खोलना एक व्यक्तिपरक कारक के रूप में काम करेगा जो इन वर्गों से प्रभावी राजनीतिक कार्यवाही को नकार देगा।

●●●

टिप्पणियाँ (Notes)

1 हिमांशु भट्टाचार्य और सीएसडीएस डेटा यूनिट ने 1996 के राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (National Election Study) के आँकड़ों में से शहरी नमूनों को अलग करने और 1996 के नमूने के शहरी उत्तरदाताओं के लिए गतिशीलता सूचकांक की गणना करने में हमारी मदद की।

2 लेखक पुणे शहर की सामाजिक प्रोफ़ाइल के एक दीर्घकालिक अध्ययन में लगे हुए हैं। इस अध्ययन का शुरुआती चरण 1999 और 2001 के बीच राजनीति और लोक प्रशासन विभाग, पुणे विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के विशेष सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरा हुआ, देखें देशपांडे 2001 और देशपांडे 2004।

References

Crompton, Rosemary (1993): (1998 Reprint), *Class and Social Stratification*, Polity Press, Cambridge.

Deshpande, Rajeshwari (2001): *A Socio-economic Profile of Pune City*, Monograph prepared under the Special Assistance Programme of UGC, Department of Politics and Public Administration, University of Pune.

– (2004): 'Inevitability and Inadequacy of Caste: Some Dilemmas for Mobilisation of Backward Classes in B V Bhosale (ed), *Mobilisation of Backward Communities in India,* Deep and Deep, New Delhi, pp 200-16.

– (2006): 'Maharashtra: Politics of Anxieties, Frustrations and Outrage', *Economic & Political Weekly*, Vol 67, No 14, April 8-14; pp 1304-07.

– (2007): 'How Much Does the City Help Dalits? Life of Dalits in Pune City – An Overview of a Century', *Indian Journal of Social Work*, Vol 68, No 1, January, pp 130-51.

Heath, Anthony (1981): *Social Mobility*, Fontana, London.

Kingston, Paul W (2000): *The Classless Society*, Stanford University Press, Stanford.

Kumar, Sanjay, Anthony Heath and Oliver Heath (2002): 'Determinants of Social Mobility in India', *Economic & Political Weekly,* Vol 37, No 30, July 20, pp 2983-87.

– (2002a): 'Changing Patterns of Social Mobility', *Economic & Political Weekly,* Vol 37, No 40, October 5, pp 4091-96.

Panini, M N (1996): 'The Political Economy of Caste' in M N Srinivas (ed), pp 28-68.

Shah, A M (2007): 'Caste in 21st Century: From System to Elements', *Economic & Political Weekly,* Vol 42, No 44, November 3-9, pp 109-16.

Shah, Ghanshyam (2002): *Caste and Democratic Politics in India*, Permanent Black, Delhi.

Sheth, D L (1999): 'Caste and Class: Social Reality and Political Representations' in Pai Panandikar and Ashis Nandy (eds), *Contemporary India*, Tate McGraw Hill, Delhi, pp 331-56.

– (1999a): ‘Secularisation of Caste and Making of the New Middle Class’, *Economic & Political Weekly,* Vol 34, No 34, August 21-28, pp 2502-10.

Srinivas, M N (1996): *Caste: Its Twentieth Century Avatar*, Viking-Penguin, New Delhi.

– (2003): ‘An Obituary of Caste as a System’, *Economic & Political Weekly*, Vol 38, No 5, February 1-7, pp 445-59.

परिशिष्ट I: 2000 और 2007 के सर्वेक्षेणों के लिए इस्तेमाल की गई पेशेवर श्रेणियाँ

उच्च : पहले दर्जे के अधिकारी, उच्चतर पेशेवर, बड़े स्तर के व्यवसाय, छोटे-स्तर, मध्यम- और बड़े स्तर के उद्योगपति।

उच्च मध्यम : दूसरे दर्जे के अधिकारी, छोटे व्यवसाय, आधुनिक कौशल पर आधारित छोटे के व्यवसाय (तीन से चार कर्मचारियों वाले), यातायात के छोटे स्तर के व्यवसाय, निर्माण क्षेत्र के छोटे स्तर के व्यवसाय।

मध्यम : तीसरे दर्जे के कर्मचारी, तीसरे दर्जे के व्यवसायों में कुशल श्रमिक, संगठित क्षेत्र में कुशल श्रमिक, पारम्परिक कौशल पर आधारित खुद के व्यवसाय, पैंशनभोगी, पाँच एकड़ और उससे ज्यादा जमीन के मालिक किसान, कॉल सेंटर कर्मचारी, सुनार, पुजारी वर्ग।

निम्न मध्यम : चौथे दर्जे के कर्मचारी, असंगठित क्षेत्र में कुशल मजदूर, अर्ध-कुशल मजदूर, छोटे-मोटे व्यवसाय, बढ़ई, लोहार, बुनकर, दर्जी, घड़ी मरम्मत करने वाले, ठठेरे (coppersmith – ताँबे का काम करने वाले), कुम्हार, नाई, धोबी, पेंटर, राजमिस्त्री, रसोइए, छोटे वित्तीय संस्थानों में काम करने वाले, एक से 4.99 एकड़ तक की जमीन वाले किसान, अंशकालिक या पूर्णकालिक नौकरी करने वाले + छोटे व्यवसाय, लॉटरी और अन्य स्टॉल मालिक, रिक्शा मालिक और वाहन चालक।

निम्न : चौकीदार, अकुशल मजदूर, छोटे-मोटे घरेलू व्यवसायों में संलग्न महिलाएँ, गोदामों में काम करने वाले मजदूर, वेटर, वाहन चालक, (सेल्समैन, बढ़ई, दर्जी, राजमिस्त्री, रसोइए, पेंटर, नाई, बुनकरी का काम करने वाले), काँच की चूड़ियाँ बनाने वाले, मोची, दूध वाले, एक एकड़ से कम जमीन वाले किसान, जमीन के मालिक + खेतिहर मजदूर।

अत्यन्त निम्न : भिखारी, वेश्याएँ, भूमिहीन खेतिहर मजदूर, जूट की बोरियों की सिलाई में लगे मजदूर, बीड़ी मजदूर, निर्माण क्षेत्र के मजदूर, सफाई-कर्मचारी, घरेलू नौकर, दाई, आकस्मिक मजदूर, कचरा उठाने वाले, टोकरी बनाने वाले, कसाई, अखबार बाँटने वाले लड़के।

परिशिष्ट II: व्यावसायिक गतिशीलता सूचकांक पर टिप्पणी

1 सर्वेक्षण में परिवार-प्रतिवादियों की चार पीढ़ियों से कमाने वाले पुरुष और महिला और उनके पति / पत्नी, प्रतिवादी के माता-पिता, दादा-दादी और प्रतिवादी के कमाने वाले बेटे और बेटियों (अधिकतम तीन बच्चों के लिए) से जानकारी एकत्र की गई है।

2 विवाहित महिला प्रतिवादी के मामले में, उनके माता-पिता और दादा-दादी के बारे में पेशेवर जानकारी माँगी गई थी न कि उनके पति के परिवार के बारे में।

3 प्रतिवादी के उन पुत्रों / पुत्रियों की भी पेशेवर जानकारी माँगी गई थी, जो माता-पिता के साथ नहीं रह रहे थे, इसमें प्रतिवादी की विवाहित बेटियाँ भी शामिल थीं।

4 इन पेशों को शुरू में 99 बिन्दुओं के पैमाने पर कोडबद्ध किया गया था और इसका ब्योरा इस टिप्पणी (परिशिष्ट I) के साथ अलग से दिया गया है।

5 सर्वेक्षण प्रश्नावली में कुल नौ पेशेवर चर शामिल किए गए थे (दादा-दादी, माता-पिता, प्रतिवादी + पति / पत्नी और तीन बेटे / बेटियाँ)। उच्च, उच्च मध्य, मध्य, निम्न मध्य, निम्न और अत्यन्त निम्न पेशेवर श्रेणियों को प्राप्त करने के लिए इन्हें 6-बिन्दु पैमाने पर फिर से कोडबद्ध किया गया था।

6 हमने परिवार की चार पीढ़ियों के पेशेवर डेटा के आधार पर चार अलग-अलग गतिशीलता सूचकांक विकसित किए।

(क) पिता और प्रतिवादी की दो पीढ़ियों के लिए गतिशीलता सूचकांक।

(ख) प्रतिवादियों की दो पीढ़ियों और पहले कमाने वाले बेटे / बेटी के लिए गतिशीलता सूचकांक।

(ग) दादा, पिता, प्रतिवादी और पहले कमाने वाले बेटे / बेटी के लिए गतिशीलता सूचकांक।

(घ) परिवार के पुरुष और महिला कमाने वालों की सभी चार पीढ़ियों के लिए गतिशीलता सूचकांक।

7 शामिल समूहों के पेशेवर स्कोर को जोड़कर पहले तीन सूचकांकों को प्राप्त करना आसान था। हालाँकि, यह कवायद निम्नलिखित कारणों से नाकाफी थी :

(क) प्रतिवादियों में से कई ऐसे थे जो कमाने वाले नहीं थे (उनमें से बड़ी संख्या गृहिणियों की थी जिन्होंने खुद को अनुपार्जक बताया था)। उनकी अनुपार्जक प्रास्थिति ने पिता और प्रतिवादी एवं प्रतिवादी और पुत्र / पुत्री दोनों की पीढ़ियों का पेशेवर गतिशीलता सूचकांक बनाने के लिए उपलब्ध वैध मामलों की संख्या को काफी कम कर दिया।

(ख) इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमने जिन सरल गतिशीलता सूचकांकों को बनाने का प्रयास किया, उन्होंने माना कि किसी परिवार की पेशेवर स्थिति पूरी तरह से परिवार के पुरुष कमाने वालों की प्रास्थिति पर निर्भर है और यह कि महिलाएँ इसमें कोई महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं देती हैं।

8 इस बोध के चलते हमने परिवार के सभी पुरुष और महिला कमाने वालों की चार पीढ़ियों का एक व्यापक पेशेवर गतिशीलता सूचकांक बनाने का प्रयास किया। एसपीएसएस जैसे अति आधुनिक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल के बावजूद सूचकांक बनाना काफी पेचीदा काम था और इसमें बहुत सारे शारीरिक काम शामिल थे। इसके अलावा, यह सूचकांक काफी हद तक किसी परिवार को सौंपे गए एक निश्चित पेशेवर स्कोर को दिए जाने वाले महत्त्व के शोधकर्ताओं के आकलन पर आधारित है।

9 सूचकांक का निर्माण निम्नानुसार चरणों में किया गया :

(क) सबसे पहले प्रत्येक पीढ़ी के कमाई करने वालों के संयुक्त पेशेवर स्कोर की गणना की गई।

(ख) प्रत्येक पीढ़ी के कमाई करने वालों के लिए संयुक्त पेशेवर स्कोर का एक 11-बिन्दु पैमाना निकाला गया।

(ग) सभी पीढ़ियों के 11-बिन्दु पैमानों को जोड़कर प्रत्येक परिवार / पेशेवर स्थिति और पीढ़ियों में उनके संयोजन के लिए एक अनूठे स्कोर पर पहुँचने के लिए एक नए चर में गणना की गई।

(घ) स्कोर को मैन्युअल रूप से रखा गया और पाँच-बिन्दु पैमाने में पुन: कोडित किया गया था, जो पीढ़ियों और अन्य में ऊपर की तरफ गतिशीलता, नीचे की तरफ की गतिशीलता, कोई गतिशीलता नहीं, गतिशीलता के विषम पैटर्न को दिखाता है (वे परिवार जहाँ हमारे पास कमाने वालों की सिर्फ एक पीढ़ी की ही जानकारी उपलब्ध थी) (एसपीएसएस सिन्टैक्स लेखकों के पास उपलब्ध है)।

10 इस सारी कवायद का सबसे उपयोगी हिस्सा पेशेवर और इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवार की महिला सदस्यों के आर्थिक मूल्य का लेखा-जोखा है। इसने उन हालात में भी अन्तर-

पीढ़ीगत गतिशीलता का आकलन करने के लिए कुछ हद तक एक लचीला उपकरण बनाया जबकि हमारे पास सिर्फ दो या तीन पीढ़ियों के बारे में ही जानकारी उपलब्ध थी।

●●●